मानद महत्तर सदस्यता
Honorary Fellowship

जिन दिङ्हान
Jin Dinghan

27 August 2015, Beijing

प्रो. जिन दिङ्हान
Prof. Jin Dinghan

प्रो. जिन दिङ्हान, जिन्हें साहित्य अकादेमी आज अपना सर्वोच्च सम्मान मानद महत्तर सदस्यता अर्पित कर रही है, एक उत्कृष्ट विद्वान तथा हिंदी साहित्य के विश्वस्तरीय श्रेष्ठ अनुवादकों में से एक हैं। आपने अपना जीवन हिंदी भाषा एवं साहित्य को पूरी तरह समर्पित कर दिया है। आपके उल्लेखनीय साहित्यिक प्रयासों ने चीनी एवं भारतीय संस्कृतियों के रिश्तों को और अधिक मज़बूती प्रदान की है। आपने चीनी विद्वानों और पाठकों के लिए हिंदी साहित्य के कुछ प्रसिद्ध ग्रंथ सुलभ कराए हैं, जिससे कि वे भारत तथा भारतीय संस्कृति को और अधिक जान-समझ सकें।

प्रो. जिन दिङ्हान का जन्म 1930 में दक्षिण मध्य चीन में स्थित हुनान की राजधानी चाङ्शा में एक उच्च शिक्षित परिवार में हुआ। आपका पैतृक आवास झेजिआङ प्रांत के झूजी शहर में है। आपके परिवार के कई सदस्य उच्च शिक्षा प्राप्त थे—आपके पिता जिन यूरेङ् एक वरिष्ठ इंजीनियर, आपकी माता एक शिक्षिका, आपके भ्राता जिन दिङ्शिन चाइना झी गोङ् पार्टी सेंट्रल कमिटी के सदस्य तथा आपके चाचा जिन यूलिन एक दार्शनिक थे। घर का माहौल अध्ययन और शिक्षा को गति देनेवाला था; और इसका गहरा प्रभाव जिन दिङ् हान पर पड़ा।

जिन दिङ्हान ने युवावस्था में बौद्ध भिक्षु ह्वेन साङ् का यात्रा-वृत्तांत *जर्नी टु द वेस्ट* (पश्चिमी यात्रा) पढ़ा था, जिसमें ह्वेन साङ् ने सातवीं सदी में बौद्ध पांडुलिपियों की खोज में की गई अपनी भारत-यात्रा का विवरण दिया था। इस कृति में ह्वेन साङ् ने भारत में अपने स्वागत तथा यहाँ के धार्मिक विद्वानों से विचार-विमर्श का ब्यौरा दिया, जब वह 17 वर्षों की यात्र के पश्चात् बौद्ध ग्रंथों की पांडुलिपियों के साथ वापस लौटा। इस कृति ने युवा विद्यार्थी जिन दिङ् हान पर गहरा प्रभाव डाला और उसने ह्वेन साङ् को अपना आदर्श मानकर

Prof. Jin Dinghan, on whom the Sahitya Akademi is conferring its Honorary Fellowship today, is a distinguished scholar and one of the preeminent translators of Hindi literature in the world. He has devoted his life to the cause of the Hindi language and its literature. His remarkable literary efforts have strengthened the bonds between the great cultures of China and India by making some of the renowned texts of Hindi literature accessible to Chinese scholars and readers, thus enabling them to learn more about India and Indian culture.

Prof. Jin Dinghan was born into a highly educated family in 1930 in Changsha town of Hunan province. His ancestral home was in Zhuji town in Zhejiang province. Many of his family members were highly accomplished – his father Jin Yuereng was a senior engineer, his mother was a teacher, his brother, Jin Dingxin was a member of the China Zhi Gong Party Central Committee and his uncle, Jin Yuelin was a Chinese philosopher. The atmosphere at home was one that promoted study and education, which had a major impact on the young Jin Dinghan.

At a young age Jin Dinghan came across the travelogue *Journey to the West*, which is an account of the journey of the Buddhist monk Xuanzhang (Hsuan-tsang) from China to India in search of Buddhist texts in the 7th century. This work, which mentioned the reception Xuanzhang had received in India, his opportunity to engage in discussions with religious scholars and his eventual return to China after 17 years carrying a large number of Buddhist manuscripts and relics, had a profound impact on the mind of the young student. Jin Dinghan considered Xuanzhang as his role model and set out to emulate him in seeking to understand Indian literature and culture.

भारतीय साहित्य और संस्कृति की खोज में उनका अनुसरण किया।

जिन दिङ्हान 1950 में बीजिंग विश्वविद्यालय के छात्र थे, जहाँ आप अंग्रेज़ी पढ़ रहे थे। लेकिन जब आपको हिंदी अध्ययन का अवसर मिला तो आपने हिंदी में विशेषज्ञता प्राप्त करने का निर्णय लिया। हिंदी अध्ययन की उनकी आजीवन यात्रा यहीं से शुरू हुई। आपने अपनी शिक्षा 1955 में पूर्ण की और बीजिंग विश्वविद्यालय में ही हिंदी प्राध्यापक के पद पर नियुक्त हुए। अपने अध्ययन के दौरान प्रो. जिन दिङ्हान न केवल भारतीय साहित्य एवं संस्कृति को समझने के लिए प्रेरित हुए, बल्कि आपका प्रयास चीन तथा भारत के आपसी संबंधों को भी मज़बूत करने का रहा।

दोनों देशों के मध्य आपसी सांस्कृतिक समझ को गहरा करने के नेक प्रयास में प्रो. जिन दिङ्हान ने बीसवीं सदी के लोकप्रिय हिंदी एवं उर्दू लेखक प्रेमचंद के प्रख्यात हिंदी उपन्यास *निर्मला* का 1959 में चीनी भाषा में अनुवाद किया। यह उपन्यास भारतीय संस्कृति की सामाजिक जटिलताओं को दर्शाता है, जिसका भावपूर्ण अनुवाद प्रो. जिन ने किया है तथा इस मार्मिक कृति में चित्रित सामाजिक यथार्थ और नाटकीय घटनाओं का सूक्ष्मता से चित्रण करने में सफल रहे हैं। यह स्रोत भाषा से सीधे चीनी में अनूदित होनेवाला किसी भी भारतीय भाषा का प्रथम उपन्यास है।

प्रो. जिन दिङ्हान ने सोलहवीं सदी के हिंदी कवि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित महाकाव्य *रामचरितमानस* का सार्थक चीनी अनुवाद किया है। यह महाकाव्य हिंदी साहित्य की महान रचनाओं में से एक है तथा इसे भारतीय संस्कृति के जीवंत सार के रूप में वर्णित किया गया है। सोलहवीं सदी में तथा आज भी उत्तर भारत में बोली जानेवाली हिंदी की एक बोली अवधी में रचित यह काव्य संस्कृत महाकाव्य *रामायण* का पुनर्पाठ है। सात कांडों में रचित यह महाकाव्यात्मक रचना उत्तर भारत के आमजन के धार्मिक ग्रंथ के रूप में प्रत्येक घर में तथा देश के शैक्षिक संस्थाओं में पढ़ी-पढ़ाई जाती है। निष्ठापूर्ण सतर्क

Jin Dinghan was a student at Beijing University in 1950 where he was studying English, when he got the opportunity to study Hindi and took a decision to specialize in Hindi thereafter. His lifelong journey of scholarship in Hindi began at this early stage. He completed his studies in 1955 and was appointed a Professor at Beijing University. During his course of study, Prof. Jin Dinghan was motivated by not only an effort to understand Indian literature and culture but also to strengthen the ties between China and India.

As part of this noble endeavour to deepen the cultural understanding between both nations, in 1959, Prof. Jin Dinghan translated the renowned novel *Nirmala* by the celebrated Hindi and Urdu writer of the late 19th and early 20th century, Munshi Premchand. This novel, which deals with the social complexities of Indian culture, has been sensitively translated by Prof. Jin, who has rendered a nuanced depiction of the social realism and dramatic events of this poignant text. This is also the first novel of any Indian language to be translated directly into Chinese.

Prof. Jin Dinghan's most significant poetic translation is that of the epic poem *Ramacharitamanas* (Lake of the deeds of Rama) by the 16th century Hindi poet Goswami Tulsidas. This Hindi epic is considered to be one of the greatest works of Hindi literature and has been described as the 'living sum of Indian culture'. It is a rendering of the Sanskrit epic the *Ramayana* in Awadhi, a dialect of Hindi commonly spoken in northern India during the 16th century and even today. Composed in 7 parts, this epic work made the Sanskrit text accessible to the common person in northern India at the time and continues to be read in homes as well as religious and scholarly institutions across the country in the present day. By faithfully and meticulously translating this immense scriptural work, Prof. Jin Dinghan made a significant text of the scriptural

अनुवाद के माध्यम से प्रो. जिन दिङ्हान ने चीन के अध्येताओं और पाठकों के लिए भारत की आध्यात्मिक विरासत का एक विशिष्ट पाठ उपलब्ध कराया। आपके अनुवाद ने असंख्य चीनी विद्यार्थियों और मुमुक्षुओं के लिए भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दुनिया के द्वार खोल दिए। यह ऐतिहासिक अनुवाद कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में प्रो. जिन दिङ्हान के अध्ययनोपरांत 1995 में प्रकाशित हुआ।

प्रो. जिन का दूसरा महत्त्वपूर्ण अनुवाद है भारतीय स्वतंत्रता सेनानी और क्रांतिकारी लेखक यशपाल के हिंदी उपन्यास *झूठा सच* (प्रथम खंड) का अनुवाद। दो खंडों में रचित यह विशालकाय उपन्यास ऐतिहासिक भारत-विभाजन के समय की उथल-पुथल भरी घटनाओं का चित्रण करता है। इस उपन्यास का ऐतिहासिक विस्तार और भावनात्मक गहराई कहीं-कहीं इसे लियो तोल्सतोय के महाकाव्यात्मक रूसी उपन्यास *वार एंड पीस* के क़रीब ला खड़ा करती है। इस उपन्यास में वर्णित इतिहास-काल की व्यापकता और यथार्थ चित्रण का प्रो. जिन ने सार्थक और प्रामाणिक अनुवाद किया है।

प्रो. जिन दिङ्हान ने अपने सहकर्मियों के सहयोग से चीन सरकार तथा बीजिंग विश्वविद्यालय के लिए हिंदी-चीनी मुहावरा कोश संपादित किया, जो 1988 में प्रकाशित हुआ।

प्रतिष्ठित विद्वान, अनुवादक और लेखक प्रो. जिन दिङ्हान को अपने लंबे और शानदार कार्यजीवन में कई सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हुए, जिनमें विश्व हिंदी भाषा सम्मान तथा भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा डॉ. जॉर्ज ग्रियर्सन पुरस्कार शामिल हैं।

प्रो. जिन दिङ्हान को अपना सर्वोच्च सम्मान मानद महत्तर सदस्यता अर्पित करते हुए साहित्य अकादेमी गौरव का अनुभव कर रही है।

heritage of India accessible to scholars and readers in China. His translation opened the doors to an understanding of the spiritual and cultural ethos of India to countless Chinese students and seekers of knowledge. This monumental translation was published in 1995, after a period of study by Prof. Jin Dinghan at Cambridge University.

Another of Prof. Jin's remarkable translations is that of the first volume of the Hindi novel *Jhootha Sach* (The Truth of Falsity) by the Indian freedom-fighter and revolutionary writer Yashpal. This epic novel in two parts deals with historical events around the tumultuous time of the partition of India. The historical range and emotional depth of Yashpal's novel has often led to its comparison with Leo Tolstoy's epic Russian novel *War and Peace*. The vast scope and realistic depictions of the historical period in this Hindi novel have been carefully and authentically translated by Prof. Jin.

Prof. Jin Dinghan has also rendered immense service by editing the *Hindi–Chini Muhavara Kosh* (Hindi-Chinese Idiom Dictionary published in 1988) with the support of his colleagues, Beijing University and the Chinese Government.

Distinguished scholar, translator and writer, Prof. Jin Dinghan in his long and illustrious career has been decorated with many laurels and awards, notable among them are the World Hindi Language Honorary Award in 1993 and the Dr. George Grierson Award in 2001, which is awarded by the Central Hindi Directorate, of the Ministry of Human Resource Development, Government of India.

Sahitya Akademi takes immense pride in bestowing its highest honour of an Honorary Fellowship on Prof. Jin Dinghan.

Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
Rabindra Bhavan
35, Ferozeshah Road, New Delhi 110001 (India)